कविताशिक्षणऔरउसकामहत्व

Suryakanth
Research Scholar
Department of Hindi, Bangalore University, Bangalore

भारतीयसाहित्यमेंगद्य कीअपेक्षापद्य कामहत्वदेखाजासकताहै। आदिकालसेआधुनिककालतकके साहित्यपरध्यानदेदियाजाये, भावधारागद्य कीतुलनामेंपद्य मेंअधिकप्रवहितहै। मानवजीवनका दु:ख औरसुखकीअभिव्यक्तिइसविधामेंनिहितहै।कहाजाताहैकिमनुष्यअपने दु:ख कोभूलनेऔरसुखकीप्राप्तिकरनेकेलिएकविताकासहारालेताहै जोजडी–बूटीकेसमानकाकार्यनिभातीहै। पद्य केलिएकविताशब्दकाभीप्रयोगकियाजानादेखाजासकताहै। कवितावहहै–जिसमेंभावाभिव्यक्तिलयबद्ध हो, मधुरहो, सरसहोऔरआकर्षकहो। कवितामेंमनुष्य–भावकी रक्षा होतीहै।कविताकरनाआसानकार्यनहींहै। मनुष्यअपनेअनुभवों द्वारा प्राप्तअनुभूतियोंको अक्षर रूपदेताहै। कविताकीप्रेरणासेमनोवेगोंकेप्रवाह जो4र सेबहनेलगतेहैं। कविताअत्युत्तमसाहनभीहैजिससेमनोवेगकोउत्तेजितकियाजासकताहै। कविताकीप्रेरनासेकर्यमेंप्रवृत्तिबडजातीहै। यदि दारिद्य, अकालकाभीषण दृश्य दिखायीदे, पेटकीज्वालासेजलेहुएप्राणियोंकेअस्थिपंजरसामनेप्रस्तुतकेयेजाये, भूखसेतडपतेहुएबालककेपासबैठीहुईमाताकाआर्तनादसुनायजाये, इसकाअसरमानवकेहृदयपरजरूरपड़ताहईऔर इन दृष्योंकोयथार्थरूप अक्षर द्वारा दिखानकविकाकर्तव्यहोगा। फलत: कविताकरनेमेंकविकर्यप्रवृत्त होजातेहैं।

कविताकीपरिभाषा

कविताकोपरिभाशितकरनेकाप्रयत्नआदिकालसेआजतककियाजारहाहै। चाहेसंस्कृतके विद्वान होयाहिन्दीके, किन्तुदोनोंकीविचारधाराएंसमानहैं। कतिपय विद्वानों कीपरिभाषाएंइसप्रकारकीहैं–

1. आचार्यमम्मटकेअनुसार:–

   “तदोषौशब्दार्थोसगुणवालंकृतिपुन: क्वापि”

   जिसमेंदोषनहो, अलंकार होऔरकहीं–कहीं अलंकार नभीहो,

   शब्दऔरअर्थहोवहकाव्यहै।

2. आचार्य श्रीपतिकेअनुसार:–

   शब्दअर्थबिनदोषगुण, अलंकार रसवान।

ताकोकाव्यबखानिए, श्रीपतिपरमसुजान॥

3. आचार्यविश्वनाथजीनेकहाहै:–

“वाक्यंरसात्मकंकाव्यं”

4. पण्डित जगन्नाथ केअनुसार:–

“रमणीयार्थप्रतिपादक: शब्द: काव्यं”

5. अम्बिकादत्तव्यासकेकथनानुसार:–

“लोकोत्तरानंददाताप्रबंध: काव्यानांयातु”

(लोकोत्तरआनंददेनेवालीरचनाकाव्यहै)

आधुनिकयुगीनसाहित्यकारोंनेअपनी–

अपनीशैलीमेंकाव्यकीपरिभाषाकोप्रस्तुतकरनेकाप्रयत्नकियाहै।

1. प्रसिद्ध नाटकसम्राटजयशंकरप्रसादजीकेशब्दोंमें:–

“काव्यआत्माकीसंकल्पात्मकअनुभूतिहै, जिसकासम्बंधविश्लेषण, विकल्पयाविज्ञानसेनहींहै। यह श्रेयमयीप्रेमरचनात्मकधाराहै।”

2. पं.रामदहिनमिश्रकेअनुसार:–

“सहृदयोंकेहृदयोंकीआह्लादकरुचिकररचनाहीकाव्यहै।”

3. श्री रामनरेशत्रिपाठीकेकथनानुसार:–

“काव्यकविकेहृदयकागानहै, उसकीबुद्धि कासौंदर्यहै।”

4. डा.गुलाबरायकहतेहैं:–

“काव्यसंसारकेप्रतिकविकीभावप्रधानमानसिकप्रतिक्रियाओंकीकल्पनाकेढांचेमेंढलीहुई श्रेयकीप्रेमरूपीप्रभावोत्पादकअभिव्यक्तिहै।”

पाठ्यक्रममेंकविता–पाठकीआवश्यकता

पाठ्यक्रममेंजहांगद्य कामहत्वहैवहांपद्य काभूउतनाहीहैक्योंकियेदोनोंभाषाकेदोपहूहैं। “काव्यानंदब्रम्हानंदसहोदर:”कहकरकाव्यकीमहत्ताकोबढ़ावादियागयाहै।अत:

कहाजासकताहैकिमनुष्यकोअपनेतनावोंसेमुक्तहोनेऔरचैनसेकुछसमयतकआरामकरने, काव्य ;कीशरणलेनीपड़तीहै। इसप्रकारकामहत्वरखनेवालीकविताआबालवृद्धोंतकप्रियबनीहुईहै। कवितामनुष्यकीभावनाओंकोपरिष्कृतकरतीहैऔरसन्मार्गकीओरअग्रसरहोनेप्रेरितकरतीहै। उदात्त भावनाओंकोछात्रोंकेचरित्रमेंसमन्वितकरनेकेलिएनितांतआवश्यकताहै। कविता द्वारा देश–प्रेम, अंतर्राष्ट्रीयसद्भावना, प्रेम, दया, सहानुभूति आदि बुणोंकाविकासकियाजासकताहै। छात्रोंमेंचरित्रनिर्माणकरनेमेंइसकीभूमिकामहत्वपूर्णमानीजतीहै। अत: कविताकोपाद्यक्रममेंस्थानदेनाआवश्यकहीनहींअनिवार्यभीहै। कवितामनुष्यकेहृदयकोपुनर्स्थापितकरनेकेसाथ–साथकल्पनाजगतकेविकासमेंसहायकहोतीहै। मानवकेव्यक्तित्वकासंगठनऔरविकासमेंइसकीसहायताअपेक्षितहै।

कविताशिक्षणकेउद्देश

कवितारागमय, लयमय. भावमयहोनेकेकारणमनुषयकेहृदयमेंभावतरंगे उत्पन्न करातीहै। अध्यापककोकविता द्वारा बच्चोंकीबोध, कल्पनाएवंअभिव्यक्ति–शक्तिकेविकासकेसाथउन्हेंभावानुभूति, आनंदानुभूतिकरानीचाहिए। कविताशिक्षणकेकुछप्रमुखउद्देशइसप्रकारकेहैं–

1. छात्रोंमेंकविताकेप्रतिरुचि उत्पन्न करना।
2. छात्रोंमेंकल्पनाशक्तिकाविकासकरना।
3. छात्रोंमेंसौंदर्यानुभूतिकीभावनाओंकोजागृतकरना।
4. चरित्र–निर्माणमेंसहायताकरना।
5. कविताकेभावकोहृदयंगमकरनेकीशक्तिकाविकासकरना।
6. छात्रोंमेंरस–छंद–अलंकारोंका ज्ञानबढाना।
7. कविताकेगुण–दोषोंकामूल्यांकनकरनेकीशक्तिप्रदानकरना।
8. छात्रोंमेंसृजनात्मकशक्तिकाविकासकरना।

कविताशिक्षणकीविधियां

कवितापाठपढानेकेलिएकुछविधियांऐसीहैंजिससेअध्यापकअपनेअध्यापनकार्यमेंसफलहोसकेऔर छात्रोंकोकवितासम्बंधीभावउनकेहृदयतकपहूंचानेमेंसक्षमबनें। मनोवैज्ञानिक दृष्टि सेशिक्षणवेत्ताओंनेप्रमुखरूपसेजिनविधियोंपरबलदियाहैउनपरमात्रध्यानदियाजारहाहै।

1.गीत प्रणाली2.अभिनयप्रणाली 3.अर्थबोध प्रणाली

1.गीत प्रणाली :–

प्रारम्भिककक्षाओंकेलिएयहप्रणालीबहुतउपयोगीहै।छात्रबचपनसेहीसंगीतकेप्रतिआकर्षितरहनेकेक ारणबालगीतएवंछन्दोबद्ध, लयवद्ध बालगीतबच्चोंकोप्रभावितकरतेहैं। अध्यापककवितापाठपढातेसमयस्वयंकविकीभावनाओंकेआधारपरसस्वर, ताल, लय आदि केसाथकविताकागायनकरेंगेतोउसकासीधाप्रभावछात्रोंकेमनपरपडताहैऔरउनमेंभावानुभूति उत्पन्न होतीहै।

2.अभिनय प्रणाली :–

प्रस्तुतप्रणालीमेंअध्यापकगीतगायनकेसाथ–साथअभिनय द्वारा कविकीभावनाओंकोअभिव्यक्तकरतेहैं। छात्रोंमेंनकेवलगायनकेप्रतिरुचि उत्पन्न होगीसाथमेंअभिनयकरनेकीकलाभीविकसितहोतीहै। इसपद्दतिकेअंतर्गतछात्रपद्य कोकंठपाठकरतेहैंऔरभावकेआधारपरअंगसंचालनकरनाभीसीखलेताहै। अभिनयसामूहिकऔरवैयक्तिकभीहोसकतेहैं।

3.अर्थबोध प्रणाली:–

प्रस्तुतप्रणालीकेआधारपरअध्यापककवितामेंप्रयुक्तशब्दोंकाअर्थबताते जातेहैं। इसविधिकोशब्दार्थकथनविधिभीकहतेहैं। इसविधिमेंशब्दकाअर्थऔरसरलभाषामेंअनुवादकरनाहीयोग्यमानाजाताहै।अत्यधिकविद्यालयोंमेंआ जकलइसविधिकाउपयोगकरनादेखाजासकताहै। इसविधिमेंअध्यापककेवलसक्रियहोकरछात्रनिष्क्रियबनेरहतेहैं।

छात्रस्वयंकविताकाअर्थसमझनेकेलिएअवसरहीनहींमिलताहै। वहसिर्फ
श्रोताबनकरकक्षाबैठारहताहै। इसप्रणालीकोईउपयोगनहींहै।